बाप जो है जैसा है यथार्थ रीति जान याद करना
सारे यूनिवर्स का बाप आकर सबकों पावन बनाता
वही रचता और रचना की नॉलेज देता
तुम आत्मा हो उसकी पढ़ाई सिखाता
युक्ति से सब मनुष्यों को समझाना
माया की बॉक्सिंग से बचना
मुख से कुवचन नही निकालना
कुदृष्टि, कुचलन ,कुकर्म नही करना
फर्स्टक्लास खुशबूदार फूल बनना
बाप की याद से सदैव हर्षित रहना
अंदर से सदा "वाह मीठा ड्रामा वाह" की निकले अवाज़
 हाय क्या हुआ ! यह संकल्प भी न हो
अचल, अडोल स्थिति से मायाजीत, प्रकृतिजीत बनो
खुशखबरी से खुशी दिलाना है श्रेष्ठ कर्तव्य

 ॐ शांति!!!
मेरा बाबा!!!